1**.** ‘लेखांकनअवधारणाओं’ को परिभाषित कीजिये । लेखांकन के लिए ये क्यों आवश्यक हैं?

2. वास्तविक जीवन के उदाहरण की सहायता से लेखांकन की द्विपक्षीय अवधारणा को स्पष्ट कीजिये ।

3. " लाभ की होने आशा न कर सभी हानियों के लिए प्रावधान करें "। उपयुक्त उदाहरण की सहायता से ‘रूढ़िवादिता की परिपाटी’ को स्पष्ट करते हुए कथन की व्याख्या करें।

4. निम्नलिखित लेन-देन के दो पहलू (प्रभाव) लिखें:

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अनुक्रमांक** | **लेन-देन** | **पहला पहलू** | **दूसरा पहलू** |
| i. | नकद से खरीदा गया सामान |  |  |
| ii. | सिमरन को नकद अदा किया |  |  |
| iii. | ब्याज प्राप्त किया |  |  |
| iv. | बिजली खर्च का भुगतान |  |  |
| v | राहुल को बेचा गया सामान |  |  |

5. चालू व्यवसाय अवधारणा से आप क्या समझते हैं? लिखिए।

6. निम्नलिखित कथनों में लेखांकन अवधारणा को पहचानिए और लिखिए:

i. व्यापार लेनदेन मुद्रा में होना चाहिए।

ii. व्यवसाय अनिश्चित काल के लिए अपनी गतिविधियों को जारी रखेगा।

iii. पुस्तकों में दर्ज किए जाने वाले हर लेन-देन के खातों में दो प्रभाव होते हैं।

iv. हर साल एक ही लेखांकन के तरीके को अपनाया जाना चाहिए।

7. सरता की परिपाटी को परिभाषित कीजिये और लेखांकन में इसके महत्व को भी स्पष्ट कीजिये ।

8. व्यवसाय इकाई अवधारणा की व्याख्या कीजिये ।

9. एक लेखांकन अवधारणामानती है कि सभी व्यापारिक लेन-देन मुद्रा में व्यक्त किए जाने चाहिए। इस लेखांकन अवधारणा का महत्व स्पष्ट कीजिए।

10. ‘लेखांकन परिपाटियों’ से आप क्या समझते हैं?